2020
SANSKRIT
[HONOURS]
Paper : IV
[SUPPLEMENTARY]

Full Marks : 100 Time : 4 Hours

The figures in the right-hand margin indicate marks.

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.

1. Answer any **five** questions of the following : 1×5=5

যে-কোনো **পাঁচটি** প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ

a) ''चतुष्पाद् व्यावहारोऽयं विवादेषूपदर्शितः'' – Name the four divisions of 'चतुष्पाद् व्यवहारः' according to याज्ञवल्क्य.

''चतुष्पाद् व्यावहारोऽयं विवादेषूपदर्शितः'' — যাজ্ঞবল্ক্যের মতানুসারে 'चतुष्पाद् व्यवहारः'-এর চারটি পাদ বা বিভাগের নাম লেখ।

b) Mention the name of one commentory on याज्ञवल्क्यसंहिता.

যাজ্ঞবল্ক্যসংহিতা-র একটি টীকার নাম উল্লেখ কর।

c) How many 'विद्या's are recognised by Kautilya?

কৌটিল্য কর্তৃক কতগুলি বিদ্যা স্বীকৃত?

d) Why was 'तालजङ्घ' perished?

'तालजङ्घ' কেন বিনাশপ্রাপ্ত হয়েছিলেন?

e) How many 'कामजव्यसन's are there in the मनुसंहिता?

মনুসংহিতা-য় কতগুলি কামজব্যসন বিদ্যমান?

f) ''तं राजा प्रणयन् सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते'' – What is the meaning of the word 'त्रिवर्ग': mentioned in this line?

''तं राजा प्रणयन् सम्यक् त्रिवर्गेणाभिवर्धते'' চরণটিতে উল্লিখিত 'त्रिवर्ग': শব্দটির অর্থ কি?

g) Mention the name of the commentory of Kullukabhatta on मनुसंहिता.

মনুসংহিতা-এর উপর কুল্লুকভট্টের টীকাটির নাম উল্লেখ কর।

2. Answer any **ten** of the following questions : 2×10=20

যে-কোনো **দশটি** প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ

a) What is 'वृद्धिः' according to याज्ञवल्क्य?

যাজ্ঞবল্ক্য-এর মতানুযায়ী 'वृद्धिः' বলতে কি বোঝ?

b) ''आधौ प्रतिग्रहे क्रीते पूर्वा तु बलवत्तरा'' – Explain.

''आधौ प्रतिग्रहे क्रीते पूर्वा तु बलवत्तरा'' — ব্যাখ্যা কর।

c) What is 'सम्प्रतिपत्ति' in 'व्यवहार:'?

'व्यवहार:'-এ 'সম্প্রতিপত্তি'-এর অর্থ কি?

d) ''स्मृत्याचार व्यपेतेन मार्गेणाधर्षित: परै:।
आवेदयति चेद् राज्ञे व्यावहारपद हि तत्।।''

– Write the meaning of the above mentioned Sloka.

— উপরিল্লিখিত শ্লোকটির অর্থ লেখ।

e) What are the general features of the 'मानिवर्गऽ'?

'मानिवर्गऽ'-এর সাধারণ বৈশিষ্ট্যগুলি কি কি?

f) ''तेन भृता राजान: प्रजानां योगक्षेमवद्धा:'' – What is 'योगक्षेम' as furnished in Arthasastra?

''तेन भृता राजान: प्रजानां योगक्षेमवद्धा:'' — অর্থশাস্ত্রে উপস্থাপিত 'योगक्षेम' শব্দটির অর্থ কি?

g) Quote the views of वातव्याधि on the selection of ministers (अमात्योत्पत्ति:) as described by Kautilya.

কৌটিল্য বর্ণিত अमात्योत्पत्ति: বিষয়ে वातव्याधि-এর মতামত উদ্ধৃত কর।

h) Describe the characteristics of 'त्रयीविद्या' after Kautilya.

কৌটিল্য বর্ণিত ত্রয়ীবিদ্যার বৈশিষ্ট্যগুলি উপস্থাপিত কর।

i) According to मनु, in time of considering the affairs and displaying valour, to whom is the king associated?

মনুর মতানুযায়ী গোপনে চিন্তা করার সময় এবং পরাক্রম দেখানোর সময় রাজাকে কাদের সাথে তুলনা করা হয়েছে?

j) ''तौर्यत्रिकं वृथाद्या च कामजो दशको गण:'' – Explain the word ''तौर्यत्रिकं as furnished by मनु in मनुसंहिता.

''तौर्यत्रिकं वृथाद्या च कामजो दशको गण:'' — মনুসংহিতায় মনুকর্তৃক উপস্থাপিত ''तौर्यत्रिकं পদটি ব্যাখ্যা কর।

k) ''कुरुते धर्मसिद्धर्थ विश्वरूपं पुन: पुन:'' – Who adopts this 'विश्वरूपम्' and why?

''कुरुते धर्मसिद्धर्थ विश्वरूपं पुन: पुन:'' — কে এই বিশ্বরূপ ধারণ করে থাকেন এবং কেন?

l) In which circumstances the Lord created the King? Quote the Sloka written by मनु in support of your answer.

কোন্ পরিস্থিতিতে পরমেশ্বর রাজাকে সৃষ্টি করলেন? তোমার যুক্তির সপক্ষে মনুপ্রদত্ত শ্লোকটি উদ্ধৃত কর।

3. Answer any **five** questions : 6×5=30

যে-কোনো **পাঁচটি** প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ

a) According to Kautilya, what steps should be taken by a king to win over the dissatisfied भीतवर्गऽ and लुब्धवर्गऽ?

কৌটিল্যের মতানুযায়ী একজন রাজা কিপ্রকারে অতৃপ্ত भीतवर्गऽ এবং लुब्धवर्गऽ দের উপর জয়লাভ করতে সমর্থ হবেন?

b) Who is प्राड्विवाक? Which role does he play in judicial procedure (व्यावहारः)?

প্রাড্বিবাক কে? 'व्यावहारः'-এ তিনি কি ভূমিকা পালন করেন?

c) Discuss briefly about the origin and characteristics of the King according to मनुसंहिता ।

মনুসংহিতা-র অনুসরণে সংক্ষেপে রাজার উৎপত্তি ও বৈশিষ্ট্য সম্পর্কে সংক্ষেপে আলোচনা কর।

d) Write a short note on 'लेख्य' (Written document) after याज्ञवल्क्य.

যাজ্ঞবল্ক্য'কে অনুসরণে 'লেখ্য' সম্পর্কে একটি টীকা লেখ।

e) Write a brief note on ancient Indian tax system after मनु ।

মনু কে অবলম্বন করে প্রাচীন ভারতীয় করনীতি সম্পর্কে সংক্ষেপে আলোচনা কর।

f) Explain fully in Sanskrit :

সংস্কৃতভাষায় ব্যাখ্যা কর :

व्यसनस्य च मृत्पोश्च व्यसनं कष्टमुच्यते।

व्यसन्यधोऽधो व्रजति स्वर्यात्यव्यसनी मृतः॥

OR

अतस्तु विपरीतस्य नृपतेरजितात्मनः।

संक्षिप्यते यशोलोके घृतविन्दुरिवाम्थसि॥

g) Translate into Bengali or English :

বাংলা অথবা ইংরেজীতে অনুবাদ কর :

''मन्त्रिपरिषदं द्वादशामात्यान् कुर्वीतेति'' मानवाः। ''षोड़शेति'' बार्हस्पत्याः। ''विंशतिम्'' इत्यौशनसाः॥ ''यथासामर्थ्यम्'' इति कौटिल्यः। ते हस्य स्वपक्षं परपक्षं च चिन्तयेयुः। अकृतारम्भमारध्बानुष्वानमनुष्टितविशेषं नियोगसम्पदं च कर्मणा कुर्युः। आसत्रैः सह कार्याणि पश्येत। अनासत्रैः सह पत्रसम्प्रेषणेन मन्त्रयेत ।

OR

विद्याविनयहेतुरिन्द्रियजयः कामक्रोधलोभमानमद कृर्षत्यागात्कार्यः। कर्णत्वगक्षिजिह्वा घ्राणेन्द्रियाणाः शब्दस्पर्शरूपरसगन्धेष्वविप्रतिपतिरिन्द्रियजयः, शस्त्रानुष्ठानं वा । कृत्स्नं हि शस्त्रमिदमिन्द्रियजयः।

4. Answer any **three** questions : 12×3=36

যে-কোনো **তিনটি** প্রশ্নের উত্তর দাও ঃ

a) Write a comprehensive note on 'ঋণাদান' (Laws of Debt) as depicted by याज्ञबल्क्य.

যাজ্ঞবল্ক্য বর্ণিত 'ঋণাদান' সম্পর্কে একটি বিস্তৃত রচনা লেখ।

b) How does Kautilya classify the envoys (दूत)? What are the qualifications and functions as described by Kautilya?

কৌটিল্য কিরূপে 'দূত'-এর শ্রেণীবিন্যাস করেছেন? কৌটিল্য বর্ণিত দূতের যোগ্যতা ও কার্যাবলী কি কি?

c) Define वार्ता and दण्डनीति: after Kautilya and mention clearly the importance of the study of both the branches of Knowledge.

কৌটিল্যানুসরণে वार्ता ও दण्डनीति:-র লক্ষণ দাও এবং উভয়প্রকার বিদ্যাচর্চার গুরুত্বকে সুস্পষ্টরূপে উপস্থাপিত কর।

d) What is 'दुर्ग'? How many 'दुर्ग's are approved by मनु? Which 'दुर्ग' is best for the King after Manu? Write a note on 'दुर्ग' with relevant S'lokas.

'दुर्ग' কি? মনু কতগুলি 'दुर्ग' এর কথা অনুমোদন করেছেন? মনুর মতে রাজার পক্ষে কোন্ 'दुर्ग' টি শ্রেষ্ঠ? প্রাসঙ্গিক শ্লোকসহ 'दुर्ग' এর উপর একটি রচনা লেখ।

5. Summarise the passage in Sanskrit Language with Devanagari Scripts. 9

अस्ति देशेषु नाना वैचित्त्यम्। सौन्दर्यसम्भारश्च बहुविध: आचारश्च विविध: प्रचलति लोके। प्राचीना शिल्पकला च तत्र तत्र मूर्तिमती विलसति नानाविधा। देशभ्रमणेन तेषां सर्वेषां साक्षात् परिचयो जायते। भ्रमणं सर्व मनोहरम्। सङ्कोचं परिभूय तच्च उदारभावं चेतस: करोति। प्रबोधयतिच विश्वभातृत्बबोधम्। पुरा भारतवर्षे तीर्थपर्यटनं प्रचलितमासीत्। तत्र हिमालयादारभ्य कुमारिकां यावद् इतस्ततश्च बहुपर्यटनं जातम्। वैदेशिक परिव्राजकैरपि पुरा भारते पर्यटनं कृतम्। तेषां ग्रन्थेभ्यो वयं तथ्यश्च बहु जातीम: ।

OR

तदाकर्थ बुद्धेऽवदत् - "भद्रे! मृत: कदापि न पुनर्जीवति। अतो वृथाशोकं परित्यज्य धर्मकर्मपरा भव।" वृद्धा तु तद्वचनेन न स्वस्थतां गता। पूर्ववदेव तं सकातरं भूयोभूय: पुत्रजीवनमयाचत। अथासौ क्षणं विचिन्त्य तामवदत् - "भद्रे! शोकं परिहर। पुत्रस्य ते जीवनार्थ यतिष्ये। गृहे यत्र कदापि कोऽपि न मृत: तादृशाद् गृकृान तोलकपरिमाणं सर्षपमानय। श्मशाने विकीर्णे तस्मिन् पुत्रस्ते द्रागेव पुनर्जीविष्यति।"